जनसंख्या परिवर्तन एवं प्रवासः- आरा नगर के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

मेजर(डॉ.) शम्भु नाथ सिंह [1]

[1] **प्रभारी प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, मोहनिया, कैमूर(बिहार).**

ABSTRACT:

मनुष्य एक गतिशील प्राणी है और मानव विकास की सभी अवस्था में गतिशीलता जनसंख्या की आधारभूत विशेषता रही है। प्राचीन काल में आवागमन के साधन सीमित थे, किन्तु औद्योगिक क्रांति के बाद आर्थिक उन्नति हुई और आवागमन के साधनों का बहुत विकास हुआ है। मानव प्रवास का इतिहास नया नही है। जनसंख्या के किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने की क्रिया को मानव प्रवास कहते है। ' प्रवास ' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रेवेन्सटीन ने सन् 1885 में अपने शोध प्रपत्र ' प्रवास के नियम ' मे किया था। प्रो. खान के अनुसार प्रवास शब्द का अर्थ जनसंख्या की गतिशीलता से है जो अपने निवास स्थान में परिवर्तन करती है। संक्षेप मे कह सकते है कि अपेक्षाकृत लम्बी अवधि के लिए निवास स्थान में परिवर्तन को ' प्रवास ' कहा जाता है।

किसी प्रदेश में प्रवसन के साथ ' जननक्षमता ' और मरणशीलता जनसंख्या के विकास तथा जनसंख्या संरचना को निश्चित करने वाले आधारभूत तत्व है। समय के आधार पर प्रवसन अस्थायी अथवा स्थायी हो सकता है। संख्या के आधार पर प्रवसन व्यक्तिगत अथवा सामूहिक हो सकता है। कार्य अनुपलब्धता और बेरोजगारी भी प्रवास का कारण हो सकता है। प्रवास का कारण जनाधिक्य भी है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिकी, जलवायु तथा अन्य सामाजिक सुविधायें भी प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवसन के कारण रहे है।

आरा नगर से सर्वाधिक प्रवास शिक्षा (65%) हेतु हुई है। इसके बाद अन्य कारण(15%) व्यापार (8.1%) आवासित (8.1) विवाह कारण (1.9%) तथा जन्म कारण से (1.09%) प्रवास हुई है। आरा नगर मे शिक्षा प्राप्ति हेंतु साधारण श्रेणी के शैक्षिक संस्थान उपलब्ध है। यहा गरीब और मध्यम श्रेणी के निवासी शिक्षा प्राप्त करते है। यहाँ शैक्षिक संस्थान के रूप में एक विश्वविद्यालय (वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय) है। आरा नगर से सर्वाधिक प्रवास शिक्षा हेतु कोटा 70.05% इसके बाद दिल्ली 15.3%, कोलकता 9.63% तथा पुणे को 5.02% प्रवास 2022 मे हुआ है। आरा नगर से प्रतिदिन शिक्षा, व्यापार, नौकरी एवं अन्य कार्य हेंतु प्रवास होता है तथा आरा नगर में भी अप्रवास आस-पास के क्षेत्रों से होता है।

KEYWORDS:

गातिशील, औद्योगिक क्रांति, प्रवास, जनन क्षमता, आधारभूत, प्रवसन, जनाधिक्य, स्वास्थ्य, जलवायु, प्रादेशिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, शिक्षा, संस्थान, अप्रवास।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th November 2024	30th November 2024

मनुष्य एक गतिशील प्राणी है और मानव विकास की सभी अवस्था में गतिशीलता जनसंख्या की आधारभूत विशेषता रही है। प्राचीन काल में आवागमन के साधन सीमित थे, किन्तु औद्योगिक क्रांति के बाद आर्थिक उन्नति हुई, और आवागमन के साधनों का बहुत विकास हुआ है। इसके परिणामस्वरूप मानव आवास एवं प्रवास में काफी बढ़ोतरी हुई है। मानव आवास एवं प्रवास सांस्कृति विसरण और सामाजिक एकीकरण का महत्वपूर्ण आधार है जिससे धरातल पर सम्यक जनसंख्या वितरण का प्रतिफल होता है। मानव प्रवास का इतिहास नया नहीं है। प्रागैतिहासिक युगों से ही मानव–समूह का प्रवास छोटे और बड़े पैमाने पर होता रहा है। प्रवसन बुद्धिजीवी मानव की उसी प्रकार से एक विशेषता है, जैसा कि उनके द्वारा उपकरण बनाया जाना और संस्कृति स्वरूप का निर्माण करना है। धरातल पर मानव विकसित एवं सामाजिक प्राणी है। आज से लगभग 20 हजार वर्ष पूर्व लिखित इतिहास तथा कृषि के विकास से पहले अफ्रीका में उनके उद्भव से लेकर मानव समूह केवल अंटार्कटिका महाद्वीप को छोड़कार पृथ्वी के अधिकांश भाग पर अधिपत्य कर सका है। इस प्रकार प्रवसन(Migration) एक मानवीय भौगोलिक तथ्य है जो प्रत्येक युग मे मानवीय आवश्यकता रहा है क्योंकि मानव की यह प्रवृति रही है कि जिस स्थान पर जीवन कठिन बन जाता है उस स्थान को छोड़कर वह ऐसे स्थान पर स्थानान्तरण करता है जहाँ जीवन तुलनात्मक दृष्टि से सुगम होता है।

जनसंख्या के किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने की क्रिया को मानव प्रवास कहते हैं। 'प्रवास' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रेवेन्सटीन ने सन् 1885 में अपने शोध प्रपत्र 'प्रवास के नियम' में किया था। इसके पश्चात अनेक विद्वानो ने इसके संबंध में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रो. खान के अनुसार प्रवास शब्द का अर्थ जनसंख्या की गतिशीलता से है जो अपने निवास स्थान में परिवर्तन करती है(खान नजमा 1980)। जेलिन्स्की के अनुसार प्रवास में परिवर्तन एक गाँव अथवा शहर से दूसरे गाँव अथवा शहर में एक राज्य के अंदर या दो राज्यों के बीच हो सकता है। प्रवास का तात्पर्य है कि स्थान परिवर्तन के साथ–साथ राजनैतिक, सीमा, समुदाय, संस्कृति एवं सामाजिक परिधि में परिवर्तन हो(जेलिन्स्की, 1964)। गोसल के अनुसार स्थानान्तरण मात्र एक निवास से दूसरे निवास स्थान पर लोगों की गतिशीलता ही नहीं अपितु यह किसी क्षेत्र के सतत् परिवर्तनयुक्त स्थल तत्व एवं क्षेत्र अंतसंबंध को समझने में सहायता प्रदान करता है (गोसल जी, एस., 1961)। बॉग उसी आवास परिवर्तन को स्थानान्तरण मानते हैं। जिसमें परिवारों को पूर्ण आवास परिवर्तन ही नहीं, दूसरे समाज में पूर्णतः समायोजन भी हो गया हो (बॉग डी.आई., 1959)। अतः संक्षेप मे कह सकते हैं कि अपेक्षाकृत लम्बी अवधि के लिए निवास स्थान में परिवर्तन को 'प्रवास' कहा जाता है।

किसी प्रदेश में प्रवसन के साथ 'जननक्षमता' और मरणशीलता जनसख्या के विकास तथा जनसंख्या संरचना को निश्चित करने वाले आधारभूत तत्व है। प्रवसन अंतर्राष्ट्रीय अन्तःप्रदेशीय., अंतःनगरीय तथा अन्तरनगरीय हो सकता है। समय के आधार पर प्रवसन अस्थायी अथवा स्थायी हो सकता है। संख्या के आधार पर प्रवसन व्यक्तिगत अथवा सामुहिक हो सकता है। यह राजनैतिक प्रवर्तित अथवा स्वतंत्र हो सकता है। सामाजिक संगठनात्मक दृष्टि से प्रवसन परिवार, जाति अथवा व्यक्ति द्वारा हो सकता है। कारण की दृष्टि से सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक कारणों से प्रवसन हो सकता है। अर्थात गाँवों से नगरीय समूहों की ओर हो सकता है। यह कहा जा सकता है कि प्रवसन ग्रामीण क्षेत्रों तथा नगरों में समान रूप से हो सकता है। प्रवसन के कई कारण हो सकते हैं। ये कारण जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं (जैसे– भूकम्प, बाढ़, भूसंख्लन) महामारियों और सूखे से लेकर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक कारण हो सकते हैं। अत्यधिक, जनाधिक्य और संसाधनों पर भारी दबाव, स्थायी अथवा अस्थायी लंबी दूरी अथवा कम दूरी भी प्रवसन का कारण हो सकता है। दूसरा उद्देश्य आर्थिक कारण हो सकता है। अपनी मातृभूमि पर भूमि संसाधन पर भारी दबाव के कारण भी लोगों को अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवास करने के लिए ऐसे स्थानों पर जाकर बसने के लिए प्रोत्साहित किया जहाँ आर्थिक लाभ प्राप्त किए जा सकते थे। मध्य एशिया मे पशुचारकों और घुम्मकड् लोगों ने निकटवर्ती बसे हुए लोगों के क्षेत्रों पर आक्रमण किया। मध्य काल में घुम्मकड़ तथा मंगोल, तातार और कुछ लोग फरधना, पनझोर, वोल्गर, आमीनिया और काकेशरू पर्वतों की उपजाऊ धारियों की ओर प्रवसन कर वहाँ बस गए।

सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विचारधारा भी प्रवसन को प्रोत्साहित करता है। म्यांमार से मुस्लिम समुदाय बंग्लादेश एवं अन्यत्र जाते रहे हैं। कश्मीरी पड़ितों और हिन्दू

पंजाबियों को असुरक्षा की भावना क्रमशः जम्मू–कश्मीर और पंजाब छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा। यही नहीं सामाजिक सुविधाओं के बिना विचार किये हुए मुस्लिम समुदाय हिन्दू बहुल क्षेत्रों से प्रवास करते देखा गया। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिकी, जलवायु तथा अन्य सामाजिक सुविधायें भी प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवसन के कारण रहें है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास के कारण आज बाजार में सुविद्या और विलासतापूर्ण वस्तुओं की उपलब्धता के कारण शिक्षित और अशिक्षित लोगों की आकांक्षाओं में वृद्धि होती है। जनसमूह आकांक्षाओं की प्राप्ति हेतु अन्य बड़े–बड़े शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं।

स्थानान्तरण के पॉच पक्ष माने गये हैं जो निम्न हैं:–

1. देश पक्ष (Space aspect)
2. काल पक्ष (Time aspect)
3. कारण पक्ष (Cause aspect)
4. संख्या पक्ष (Number aspect)
5. स्थिरता पक्ष (Stability aspect)

प्रसिद्ध समाजशास्त्री एवरेट ली ने 1965 में एक नया प्रवसन का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उसने चार कारक प्रस्तुत किये जो प्रवासियों के निर्णय को प्रभावित करते हैं। ये चार कारक निम्न हैः–

1. मूल क्षेत्र में प्रभावी कारक
2. गन्तव्य स्थान में प्रभावी कारक
3. वे कारक जो मध्यवर्ती बाधायें उपस्थित करते है तथा
4. व्यक्तिगत कारक जो व्यक्ति के लिए विशिष्ट होते हैं।

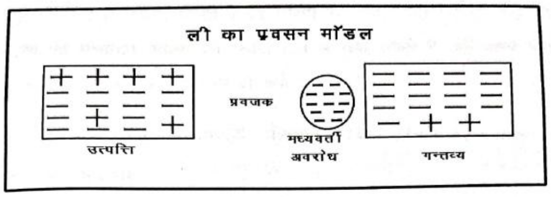

प्रवासी दोनों ही उद्‌गम/मूल और गन्तव्य स्थानों के सकारात्मक और नाकारात्मक कारकों से प्रभावित होते हैं। ली ने यह प्रस्तावित किया कि संभावित प्रवासी गन्तव्य के ज्ञात और प्रत्यशित लाभों और हानियों की तुलना अपने मूल स्थान की अवस्थाओं से करता है। मूल स्थान से प्रस्थान करने के लिए गन्तव्य के आकर्षण इतने अधिक होने चाहिए जो उसके मूल स्थान पर रूकने और बीच में आने वाली बाधाएँ जैसे दूरी दुबारा स्थापित होने में खर्चा और स्थापित जीवन के आर्दश के विघटन से अधिक प्रभावशाली हो।

जनसंख्या और प्रवसन के प्रसिद्ध विशेषज्ञ प्रो. जेलिन्सकी ने 1971 में प्रवसन संबंधी एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उनका यह प्रवसन सिद्धान्त गतिशीलता संक्रमण मॉडल के रूप में जाना जाता है।

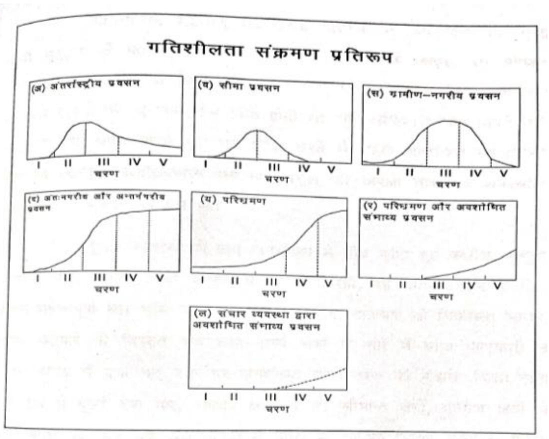

आरा नगर से प्रवासः–

वर्ष 2022 के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचें हैं कि आरा नगर से प्रवास अन्य शहरों को हुई है। इस क्षेत्र से सर्वाधिक प्रवास शिक्षा (65 प्रतिशत) हेतु हुई है। इसके बाद अन्य कारण (15 प्रतिशत), व्यापार (8.1 प्रतिशत), अवासित(8.1 प्रतिशत), विवाह कारण(1.9 प्रतिशत), तथा जन्म कारण से (1.09 प्रतिशत), प्रवास हुई है।

आरा नगर से प्रवास, 2022 (प्रतिशत में)

क्र.सं.	कारण	प्रतिशत	कोटा	दिल्ली	पूणे	कोलकता	अन्य शहर
1.	शिक्षा	65.0	70.05	15.3	5.02	9.63	18.20
2.	व्यापार	8.1	1.9	69.05	5.6	23.5	21.60
3.	विवाह	1.9	0.5	28.19	1.5	3.6	66.21
4.	जन्म	1.09	1.1	10.9	3.6	7.5	76.9
5.	अन्य कारण	15.0	10.16	30.5	2.9	8.1	48.34
6.	आवासित	8.1	10.00	28.05	5.6	15.19	41.05

स्त्रोत : सांख्यिकीय विभाग,आरा , भोजपूर(बिहार),2022

आरा नगर में शिक्षा प्राप्ति हेतु साधारण श्रेणी के शैक्षिक संस्थान उपलब्ध है। यहाँ गरीब और मध्यम श्रेणी के निवासी शिक्षा प्राप्त करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से छात्र नगर में शिक्षा प्राप्ति हेतु आते हैं और प्रतिदिन अपने आवास को लौट जाते हैं। इस कारण नगर पर प्रतिदिन जनसंख्या का दबाव भी देखा जाता है। यहाँ शैक्षिक संस्थान के रूप में एक विश्वविद्यालय (वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय) है। इसके बाद महाविद्यालय के रूप में जैन कॉलेज आरा जहाँ लगभग 6000 विद्यार्थी शैक्षिक लाभ प्राप्त करते हैं। महाराजा कॉलेज आरा से लगभग 5000 विद्यार्थी को शैक्षिक लाभ मिलता है। जगजीवन कॉलेज आरा से 4500 विद्यार्थी, एम.बी. कॉलेज आरा से 4000 विद्यार्थी, महंथ महिला कॉलेज आरा से लगभग 3500 विद्यार्थी एवं कुछ प्राइवेट कॉलेज भी है जहाँ विद्यार्थी शैक्षिक लाभ प्राप्त कर कुछ आरा में आसपास के गाँव प्रतिदिन लौट जाते हैं। जिस विद्यार्थी को यहाँ आवास की सुविधा नहीं है वे भाड़े की मकान में रहकर सुविधा प्राप्त करते हैं। इन शैक्षिक संस्थान के अलावे कुछ प्राइवेट कोचिंग संस्थान है जहाँ बड़े पैमाने पर छात्र एवं छात्राएँ शैक्षिक लाभ प्राप्त करते हैं।

उपरोक्त शैक्षिक संस्थाएँ उच्च श्रेणी की शिक्षा देने मे सक्षम नहीं है। आज देश स्तर पर बडे–बड़े प्रतियोगिता परीक्षाएँ हो रही है जिसमें छात्र–छात्राएँ अपने पिछड़ने की डर से अन्य शहर को शिक्षा प्राप्ति हेतु जातें है। वहाँ से शिक्षा पाकर नौकरी भी प्राप्त कर रहे हैं।

नगर से सर्वाधिक प्रवास शिक्षा हेतु कोटा–70.05 प्रतिशत इसके बाद दिल्ली–15.3 प्रतिशत, कोलकता–9.63 प्रतिशत तथा पुणे शहर को 5.02 प्रतिशत प्रवास 2022 में हुआ है जो तालिका से स्पष्ट है। कोटा शहर का बंसल क्लासेज, रिजनोयस क्लासेज, ऐलेन क्लासेज, मेडिकल एवं इंजिनियरिंग हेतु काफी पुराने शैक्षिक सेन्टर है जहाँ छात्र एवं छात्राएँ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

दूसरे शैक्षिक सेन्टर के रूप में दिल्ली शहर है जहाँ प्रतिवर्ष विद्यार्थी 15.3 प्रतिशत शिक्षा ग्रहण हेतु प्रवास करते हैं। यहाँ बहुत सारे इंजिनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज एवं विश्वविद्यालय उपलब्ध है जहॉ छात्र एवं छात्राएँ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

तीसरे शैक्षिक सेन्टर के रूप में कोलकता शहर है जहाँ 9.63 प्रतिशत छात्र नगर के पलायन करते हैं और नौकरी प्राप्त कर अन्यत्र प्रवासित हो जाते हैं। कोलकता शहर में शैक्षिक संस्थान के रूप में बहुत सारे महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय है। वहाँ का यादवपुर विश्वविद्यालय देश के 11वें स्थान पर ख्याति प्राप्त कर लिया है। यहाँ से प्रतिवर्ष 10 हजार इंजिनियरिंग छात्र तथा अन्य कोर्स की शिक्षा एवं नौकरी प्राप्त कर अन्यत्र शहर को चले जाते हैं।

चौथे शैक्षिक सेन्टर के रूप में पूणे शहर है जहाँ शैक्षिक संस्थान के रूप में मेडिकल एवं इंजिनियरिंग संस्थान उपलब्ध है जहाँ शिक्षा का उत्तम प्रबंध है। यहाँ से प्रतिवर्ष लगभग आरा नगर से 5.02 प्रतिशत छात्र शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रवास करते हैं।

इस तरह उपरोक्त सभी संस्थाएँ शिक्षा हब के रूप में जाना जाता है क्योंकि वहाँ शैक्षिक स्तर काफी उँचा है। छात्र एवं छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर वे नौकरी प्राप्त कर लेते हैं।

उपरोक्त विवरण आरा नगर से दूसरे नगर को प्रवास का था, लेकिन आरा नगर में प्रतिदिन शिक्षा प्राप्ति, नौकरी एवं व्यापार हेंतु अप्रवास होता है जिसका प्रभाव नगर के व्यवस्था पर पड़ता है। आरा नगर में प्रतिदिन जाम की समस्या यह प्रमाणित करती है कि शहर में जनसंख्या का प्रभाव है। इस नगर में प्रतिदिन दूसरे गांव एवं नगर से छात्र एवं व्यापारी आते हैं जो नीचे की तालिका से स्पष्ट है।

नगर में आन्तरिक प्रवास, 2022 (प्रतिदिन)

क्र.सं.	कारण	गड़हनी क्षेत्र	बिहिया क्षेत्र	बिहटा क्षेत्र	सहार क्षेत्र
1.	शिक्षा	1020	659	1098	615
2.	व्यापार	516	210	58	199
3.	नौकरी	20	18	156	16
4.	अन्य कारण	29	56	77	68

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर।

आरा नगर में प्रवास प्रतिदिन–2022

क्र.सं.	कारण	बक्सर के तरफ	पटना के तरफ	पीरों के तरफ	सहार के तरफ	बड़हरा के तरफ
1.	शिक्षा	216	1076	210	55	96
2.	व्यापार	98	2195	53	75	213
3.	नौकरी	325	698	67	9	12
4.	अन्य कारण	476	698	22	15	76

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि आरा नगर से प्रतिदिन शिक्षा, व्यापार, नौकरी एवं अन्य कार्य हेतु प्रवास होता है तथा आरा नगर में भी अप्रवास आसपास के क्षेत्रों से होता है।

REFERENCES

1. भारत का जनसंख्या भूगोल - डॉ. अनुपम पांडेय
2. जनसंख्या भूगोल - डॉ. चतुर्भुज ममोरिया, डॉ. संतोष कुमार दांगी
3. जनसंख्या भूगोल - डॉ. एस. डी. मौर्य
4. आधुनिक बिहार का भूगोल - राधा कान्त भारती
5. सेन्सस – 2011
6. सेन्सस – 2021
7. नगर निगम पुस्तिका – 2022
8. आरा नगर विशेषांक (नेट)
9. शोध प्रबन्ध " आरा नगर का शैक्षणिक परिदृश्य " शशि कुमार